श्रीरामचरितमानस का बालकों के चारित्रिक विकास में योगदान

पंकज सिंह
शोध अध्येता, शिक्षाशास्त्र विभाग, उ.प्र. राम मनोहर लोहिया अवध वि.वि. अयोध्या

एवं डा. छत्रसाल सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी0जी0 कालेज, बाराबंकी

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में श्रीरामचरितमानस का बालकों के चारित्रिक विकास में योगदान का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में श्रीरामचरितमानस की दोहों, चौपाई एवं सोरठों के माध्यम से बालकों के चारित्रिक निर्माण में योगदान को दिखाया गया है। प्रस्तुत शोध द्वारा यह पूर्णतयः स्पष्ट है कि श्रीरामचरितमानस बालकों के चारित्रिक विकास में पूर्णतयः सहायक है अतः यह कहा जा सकता है कि यदि इसे विद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये तो यह बालकों के चारित्रिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। यह एक ऐसा अद्वितीय ग्रन्थ है जिसका अनुकरण मात्र करने से व्यक्ति उच्चता के शिखर पर पहुँच सकता है।

१. प्रस्तावना

व्यक्ति का व्यवहार उसकी आन्तरिक प्रेरणाओं का परिणाम है अतः व्यक्ति के वाह्य व्यवहार पर नियंत्रण करने के लिये आन्तरिक प्रेरणाओं पर भी नियंत्रण आवश्यक है। आन्तरिक प्रेरणाओं पर नियंत्रण लगाने के लिये हमें सांस्कृतिक साधनों का सहारा लेना पड़ेगा। जैसे– धर्म, नैतिक एवं सद्चारिता आदि।

श्रीरामचरित मानस हमें सर्वांगीण शिक्षा देने में सक्षम है। एक ओर हमें भरत के चरित्र से आदर्श भ्रातत्व भावना देखने को मिलती है तो दूसरी ओर भगवान राम ने जटायू द्वारा की गयी सेवा को देखकर सेवा भावना व दया का विकास एवं शबरी के झूठे बेर खाकर श्री राम जी ने ऊँच–नीच की भावना का अंत कर दिया।

२. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वैज्ञानिक प्रगति से भौतिकवादी दृष्टिकोण विकसित हुआ है और लोग भौतिक उपलब्धियों की दौड़ में अंधाधुंध भाग रहे हैं, जिन्हें हम विकसित देश कहते हैं उन्होंने भौतिक उपलब्धियाँ अधिकाधिक प्राप्त कर ली हैं। फिर भी वे संतुष्ट नहीं है उनमें इतनी स्वार्थपरता आ गयी है कि वे दूसरे देशों की सम्प्रभुता को नष्ट करके स्वयं सम्पन्न और शक्तिशाली बनना चाहते हैं। इसी कारण विश्व युद्ध होते हैं और मानवता पद दलित होती रहती है। यदि विश्व में शान्ति स्थापित करनी है, विश्व–बन्धुत्व को विकसित करना है तो आवश्यक है कि हम धार्मिक शिक्षा द्वारा आध्यात्मिकता का विकास करें। इसलिये शोधकर्त्ता को चारित्रिक एवं नैतिक विकास के लिये श्री रामचरितमानस पर

शोध की आवश्यकता महसूस हुई। नैतिक शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा के पक्ष में विभिन्न शिक्षाविदों एवं आयोगों ने भी उल्लेख किया है।

३. उद्देश्य

श्रीरामचरितमानस के दोहों और चौपाइयों से बालकों के चारित्रिक विकास में योगदान करने वाले विभिन्न मूल्यों का अध्ययन करना।

४. परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में अध्ययन हेतु ''गोस्वामी तुलसीदास'' द्वारा रचित ''श्रीरामचरितमानस'' का अध्ययन किया गया है।

५. शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया है।

६. आंकड़ों की प्राप्ति के साधन

ऐतिहासिक अनुसंधान में आँकड़ों की प्राप्ति के लिये दो तरह के साधन होते हैं : एक प्राथमिक साधन दूसरा द्वितीयक साधन। चूँकि श्रीरामचरितमानस में वर्णित तथ्यों को गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी कल्पना शक्ति एवं चिन्तन शक्ति द्वारा उल्लिखित किया है इसलिये यह द्वितीयक साधन की श्रेणी में आयेगा।

७. मूल्यांकन

ऐतिहासिक अनुसंधान में आँकड़ों की यथार्थता की जाँच के लिये ऐतिहासिक समालोचना का प्रयोग किया जाता है। ऐतिहासिक समालोचना दो प्रकार की होती है– एक वाह्य समालोचना दूसरी आन्तरिक समालोचन। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'श्रीरामचरितमानस' उनकी मूल कृति है, जो पूर्णतः यथार्थ मौलिक रचना है जिसमें उनके वाह्य स्वरूप के विषय में पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त करने में सफलता मिलती है।

८. व्याख्या एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोध पत्र में श्रीरामचरितमानस की चौपाई, दोहों एवं सोरठों के माध्यम से बालकों के चारित्रिक निर्माण में योगदान दिखाया गया है। इसके माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार 'श्रीरामचरितमानस' के अध्ययन से बालकों का चरित्र निर्माण संभव है।
श्रीरामचरितमानस के अध्ययन द्वारा बालकों में कर्त्तव्य पालन वचन पालन, पितृ भक्ति, गुरू भक्ति धर्म की महानता का ज्ञान, नीति ज्ञान व ईश्वर भक्ति का महत्व आदि गुणों का विकास संभव है।

९. श्रीरामचरितमानस का चरित्र निर्माण में योगदान

९.१ वचन पालन

कैकेयी द्वारा राजा दशरथ से दो वरदानों के रूप में भरत को राजसिंहासन व रामजी को चौदह वर्ष का वनवास मांगने पर दशरथ जी का अत्यन्त व्याकुल हो जाना एवं श्रीरामजी द्वारा उन दोनों वचनों को पिता की आज्ञा समझ कर अत्यन्त सहजतापूर्वक वन जाने की आज्ञा लेने का वर्णन किया गया है।

चौ0अति लघु बात लागि दुखु पावा। काहूँ न मोहि कहि प्रथम जनावा।।
देखि गोसाइँहि पूँछिऊँ माता। सुनि प्रसंगु भए सीतल गाता।।

श्रीराम चन्द्र जी दशरथ जी से कहते हैं कि इस अत्यन्त तुच्छ बात के लिये आपने इतना दुख पाया। मुझे किसी ने पहले कहकर यह बात नहीं जतायी। स्वामी (आप) को इस दशा में देखकर मैंने माता से पूछा। उससे सारा प्रसंग सुनकर मेरे सब अंग शीतल हो गये (मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई)।

दो0मंगल समय सनेह बस सोच परिहरिअ तात।
आयसु देइअ हरषि हियँ कहि पुलके प्रभु गात।।

हे पिताजी ! इस मंगल समय स्नेहवश होकर सोच करना छोड़ दीजिए और हृदय से प्रसन्न होकर मुझे आज्ञा दीजिए। यह कहते हुए प्रभु श्रीरामचन्द्र जी सर्वांग पुलकित हो गये।

९.२ *गुरु आदर*

गुरू के आदर व सम्मान की शिक्षा निम्नलिखित चौपाइयों व दोहों से मिलती है–

तब नरनाहैं बसिष्ठु बोलाए। रामधाम सिख देन पठाए।।
गुर आगमनु सुनत रघुनाथा। द्वार आइ पद नायउ माथा।।

तब राजा ने वशिष्ट जी को बुलाया और शिक्षा देने के लिये श्री रामचन्द्रजी के महल में भेजा। गुरू का आगमन सुनते ही श्री रघुनाथ जी ने दरवाजे पर आकर उनके चरणों में मस्तक नवाया।

सादर अरघ देइ घर आने। सोरह भाँति पूजि सनमाने।।
गहे चरन सिय सहित बहोरी। बोले रामु कमल कर जोरी।।

आदरपूर्वक अर्ध्य देकर उन्हें घर में लायें और षोडशोपचार से पूजा करके उनका सम्मान किया। फिर सीता जी सहित उनके चरण स्पर्श किये और कमल के समान दोनों हाथ को जोड़कर श्री राम जी बोले–

९.३ *पितृ भक्ति*

प्रस्तुत चौपाइयां पितृ भक्ति को प्रदर्शित करती हैं :–

सुनु जननी सोई सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी।।
तनय मातु पितु तोष निहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा।।

(श्रीरामचन्द्र जी माता कैकेयी से कहते हैं) हे माता! सुनो वही पुत्र बड़ा भागी है, जो पिता–माता के वचनों का अनुरागी है। (आज्ञा पालन के द्वारा) माता–पिता को संतुष्ट करने वाला पुत्र है, हे जननी। सारे संसार में दुर्लभ हैं।

धन्य जनमु जगतीतल तासू। पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू।।
चारि पदारथ करतल ताकें। प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें।

(श्रीरामचन्द्र जी कहते हैं) इस पृथ्वीतल पर उसका जन्म धन्य जिसके चरित सुनकर पिता को परम आनन्द हो। जिसको माता–पिता प्राणों के समान प्रिय हों, चारों पदार्थ (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) उसके करतलगत (मुट्ठी में) रहते हैं।

९.४ *भ्रातृ–प्रेम*

जब लक्ष्मण जी को यह ज्ञात होता है कि श्रीरामजी वन को जा रहे हैं तो वे भी उनके साथ जाने का निवेदन करते हैं और राजचन्द्र जी के साथ न चलने के लिये जब समझाते हैं तो वे किस प्रकार उत्तर देते हैं। प्रस्तुत चौपाइयों में इसी का वर्णन किया गया है –

मैं सिसि प्रभु सनेहँ प्रतिपाला। मंदरु कि लेहिं मराला।।
गुर पितृ मातु न जनाउँ काहू। कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू।।

(लक्ष्मण जी कहते हैं कि) मैं तो प्रभु (आप) के स्नेह में पला हुआ छोटा बच्चा हूँ। कहीं हंस भी मन्दराचल या सुमेरु पर्वत को उठा सकता है। हे नाथ! स्वभाव से ही कहता हूँ, आप विश्वास करें, मैं आपको छोड़कर गुरु, पिता, माता किसी को भी नहीं जानता।

९. अयोध्या काण्ड चौपाई संख्या–71–1

हंसबंसु दसरथु जनकु राम लखन से भाइ।
जननी तूँ जननी भई बिधि सन कछु न बसाई।।

भरत जी को जब यह ज्ञात होता है कि उनको राज्य दिलाने के लिये माता कैकेयी ने श्री रामचन्द्र जी को 14 वर्ष का वनवास दिलवाया तो वे माँ पर क्रोधित होते हुए इन वचनों को कहते हैं :–
मुझे सूर्यवंश (सा वंश), दशरथ जी (सरीखे पिता) और राम–लक्ष्मण से भाई मिले। पर हे जननी! मुझे जन्म देने वाली माता तू हुई! (क्या किया जाय।) विधाता से कुछ भी वश नहीं चलता।

१०. धर्म की महानता की शिक्षा

श्रीरामचरित् मानस में धर्म की शिक्षा के महत्व को बताया गया है कि अपने धर्म का पालन करना व्यक्ति के लिये कितना आवश्यक है।

तात कृपा करि कीजिअ सोई। जातें अवध अनाथ न होई।
मंत्रिहि राम उठाई प्रबोधा। तात धरम मतु तुम्ह सबु सोधा।

हे तात! कृपा करके वही कीजिए जिससे अयोध्या अनाथ न हो। श्री राम जी ने मंत्री को उठाकर धैर्य बँधाते हुए समझाया कि हे तात! आपने तो धर्म के सभी सिद्धान्तों को छान डाला है।

सिबि दधीच हरिचंद नरेसा। सहे धरम हित कोटि कलेसा।।
रतिदेव बलि भूप सुजाना। धरमु सहि संकट नाना।।

शिबि दधीचि और राजा हरिश्चन्द्र ने धर्म के लिये करोड़ों कष्ट सहे थे। बुद्धिमान राजा रन्तिदेव और बलि बहुत से संकट सहकर भी धर्म को पकड़े रहे (उन्होंने धर्म का परित्याग नहीं किया)

११. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध–पत्र मे श्री रामचरित् मानस में उल्लिखित दोहों एवं चौपाइयों के माध्यम से बालकों के चारित्रिक विकास में योगदान देने वाले गुणों की व्याख्या की गयी है।
शोध द्वारा यह पूर्णतयः स्पष्ट है कि श्री रामचरित्मानस बालकों के चारित्रिक विकास में पूर्णतयः सहायक है। श्री रामचरित्मानस के अध्ययन से बालकों में गुरुजनों के सम्मान करने की प्रेरणा, माता–पिता की आज्ञा पालन करने की प्रेरणा, वचन पालन करने की प्रेरणा, मातृ–पितृ भक्ति, भ्रात–प्रेम, नीति ज्ञान की शिक्षा, धर्म की महानता का ज्ञान, भक्ति का महत्व एवं अनेक ऐसे गुणों का विकास करने में सहायक है, जिनका भावी जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

१२. सुझाव

1.प्रस्तुत शोध में केवल हिन्दू धर्म पर अध्ययन किया गया है। अन्य धर्मों पर भी अध्ययन किया जा सकता है इससे यह अधिक प्रतिनिधित्व पूर्ण होगा।
2.यह श्री रामचरित् मानस का विवेचनात्मक शोध है इस पर तुलनात्मक शोध भी किये जा सकते हैं।
3.अन्य धर्म ग्रन्थों के साथ श्री रामचरित् मानस को लेकर इसके चारित्रिक विकास से तुलनात्मक अध्ययन को भी देखा जा सकता है।

१३. शैक्षिक महत्व

श्रीरामचरित्मानस वर्तमान में मानवीय मूल्यों की पुर्नस्थापना करने में सहायक है। माननीय मूल्यों के अन्तर्गत दया, करुणा, ईमानदारी, साहस, परस्पर सहयोग, उदारता, कर्त्तव्य पालन, गुरुजनों का सम्मान आदि आते हैं। इसके अध्ययन से छात्रों का उच्चकोटि का नैतिक एवं चारित्रिक विकास होता है। वर्तमान समय में छात्रों में बढ़ती अनुशासनहीनता को कम कराने में श्रीरामचरित्मानस का महत्व सर्वाधिक हैं। इसके अध्ययन से छात्रों में धार्मिक शिक्षा के प्रति रुचि जाग्रत होगी। और वे धार्मिक शिक्षा के महत्व को समझ सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. तुलसीदास गोस्वामी (2005). श्रीरामचरितमानस, गोरखपुर : गीताप्रेस
२. चौबे, डा. सरयू प्रसाद (1975). भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक)
३.सिंह, अरुण कुमार (2015). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास
४. सरस्वती, मालती (2008). शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, लखनऊ : आलोक प्रकाशन गुइन रोड
५. पाठक, पी.डी. (2006). भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन